डॉ. राकेश चक्र

जल ही कल है बंदर

जल ही कल है बंदर मामा
सोच समझ जल खर्च करो।
नदियों में कचरा मत डालो
भालू , कालू जरा डरो।।

नदियों से ही जीवन सबका
खेतों में आता है पानी।
यदि ना चेते भू के प्राणी
हो जाए सब खत्म कहानी।

बूँद - बूँद से घट है भरता
अपनी पीड़ा स्वयं हरो।।

बिल्ली बोली बंदर से यूँ
जल से नहीं करो मनमानी।
स्नान करो कम जल से ही तुम
नहीं बहाओ यूँ ही पानी।

स्वार्थ छोड़ सबके हित जीना
झरनों जैसा सदा झरो।।

जल से ही हम सबका जीवन
जल ही अपनी प्यास बुझाए।
अन्न, सब्जियाँ , फल हम पाएँ
जंगल , वन इससे लहलहाए।

पंच तत्व की करो सुरक्षा
शुभ कर्मों से स्वयं तरो।।

खुश रहना जीवन की कुंजी

तन हरषाया , बदन फुलाया
खाया दाना - पानी।
खुश रहना जीवन की कुंजी
सच्ची यही कहानी।।

उपवन की शोभा हैं न्यारी
पढ़ें किताबें चिड़ियाँ।
जीवन का विज्ञान इन्हीं पर
खेलें गुड्डा गुड़िया।।

तनिक न मन में कपट वैर है
हमने बात ये जानी।
खुश रहना जीवन की कुंजी
सच्ची यही कहानी।।

पेट से ज्यादा कभी न खाएँ
कभी न तौंद बढ़ातीं।
भूख लगे पर दाना चुगतीं
सादा गणित पढ़ातीं।।

भोर में जगकर योग करें सब
कहती इनकी नानी।
खुश रहना जीवन की कुंजी
सच्ची यही कहानी।।

हिंदी , इंग्लिश सब कुछ पढ़तीं
पढ़तीं बंगला भाषा।
सब ही भाषा बहनें - बहनें
सबमें जीवन आशा।।

प्रेम बाँसुरी रोज बजाएँ
सब है याद जुबानी।
खुश रहना जीवन की कुंजी
सच्ची यही कहानी।।